Dr. Namrta Jain & Dr. Ratnesh Kumar Jain

लेखक के रूप में प्रकाशित प्रमुख संकलन

- मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श
- डी.एल.एड. प्रथम सेमेस्टर एवं चतुर्थ सेमेस्टर (SCERT, उ.प्र.) हेतु हिंदी शिक्षण
- मूल मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएं
- प्रयोजनमूलक भाषा एवं अनुवाद
- Development of Education System in India
- भारतीय शिक्षा प्रणाली का बदलता स्वरूप
- भारतीय समाज एवं मनोविज्ञान
- सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक आंदोलनों का समाजशास्त्र
- भारतीय ज्ञान परम्परा: विज्ञान, दर्शन, संस्कृति और स्वास्थ्य की विरासत
- टीजीटी एवं पीजीटी (हिंदी व संस्कृत) विषयों पर प्रतियोगी पुस्तकों का लेखन
- डी.एल.एड. प्रथम, तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर (SCERT, उ.प्र.) हेतु विज्ञान शिक्षण
- Microbiology & Plant Pathology
- Core Science
- महाविद्यालयीन स्तर पर शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्धन में प्राचार्यों की भूमिका
- राष्ट्र निर्माण का युवा मंच: राष्ट्रीय सेवा योजना
- भारतीय ज्ञान परम्परा विज्ञान, दर्शन, संस्कृति और स्वास्थ्य की विरास

संपादक के रूप में प्रकाशित प्रमुख संकलन

- वैश्विक विचारधाराओं का मूल : भारतीय ज्ञान परंपराएँ
- वैश्विक चिंतन एवं भारतीय ज्ञान परंपराएँ
- भारतीय ज्ञान परंपराओं का वैश्विक दृष्टिकोण
- यथार्थ के धरातल पर मानवीय विचारों की दिशाएँ
- New Education Policy-2020: Different Dimensions of Education
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा के विभिन्न आयाम
- भारतीय लोकतंत्र का चतुर्थ स्तंभ : मीडिया (भाग-1)
- भारतीय लोकतंत्र का चतुर्थ स्तंभ : मीडिया (भाग-2)
- समकालीन साहित्य और स्त्री विमर्श
- पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य की सामाजिक क्रांति और नारी जागरण
- स्वामी विवेकानंद की सामाजिक क्रांति
- प्रेमचंद के साहित्य में प्रतिरोध के स्वर
- भारत की गतिशील प्रवृत्ति के आधार स्तंभ : महान शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक, साहित्यकार एवं महापुरुष
- भारतीय परिवेश में किन्नर जीवन की भूमिका
- भारत के महान शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक, साहित्यकार एवं महापुरुषों का पथ-प्रदर्शन
- भारतीय समाज के विविध आयाम
- भारत के महान शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक, साहित्यकार एवं महापुरुषों का पथ-प्रदर्शन : एक संगोष्ठी
- शिक्षा, शिक्षक एवं शिक्षार्थी : त्रिध्रुवीय प्रक्रिया का बृहद् अवलोकन
- महान शिक्षाशास्त्रियों, साहित्यकारों, महापुरुषों एवं दार्शनिकों का भारत के विकास में महत्वपूर्ण अवदान
- भारतीय साहित्य, सिनेमा और संस्कृति के विविध आयाम
- भारत के महान शिक्षाशास्त्रियों, दार्शनिकों, साहित्यकारों एवं महापुरुषों का योगदान
- आत्मनिर्भर भारत के विविध आयाम : आवश्यकताएँ, चुनौतियाँ एवं समाधान (भाग-1)
- आत्मनिर्भर भारत के विविध आयाम : आवश्यकताएँ, चुनौतियाँ एवं समाधान (भाग-2)
- भारतीय शोध प्रकाशन के परिदृश्य और शोध प्रविधि
- नव भारत की दिशा : शिक्षा, तकनीक, स्वास्थ्य एवं समाज
- नव भारत का पथ : शिक्षा, तकनीक, स्वास्थ्य और समाज
- The Direction of New India: Education,Technology, Health and Society
- विकसित भारत 2047: बहुविषयी दृष्टिकोण से राष्ट्र निर्माण
- आत्मनिर्भर भारत से विकसित भारत तक ज्ञान, नवाचार, और परंपरा का संग
- India 2047: An Era of Inclusive Development, Cultural Consciousness, and Innovation
- आत्मनिर्भर एवं विकसित भारत: बहुआयामी परिवर्तन और सतत विकास की दिशा
- आत्मनिर्भर एवं विकसित भारत: बहुविषयी परिवर्तन एवं सतत प्रगति का प्रतिमान
- Atmanirbhar and Viksit Bharat: An Integrated Framework for Innovation and Sustainable Growth
- वोकल फॉर लोकल आत्मनिर्भर भारत की दिशा में महत्वपूर्ण कदम

Sanmati Spectrum of Knowledge & Emerging Discourse
Office Address- B-002 'Sanmati' Faculty Block
TMU Campus, Delhi Road Moradabad
Mob- +91 9870713912 /+91 8979782949.
E-Mail- sanmatijournal@gmail.com
Website - sanmatijournal.in

ISSN 3108-1819 Year 1 Volume 2 Issue 2 April - June 2026

Sanmati

Spectrum of Knowledge & Emerging Discourse

(A National Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Journal)

(कला, मानविकी, सामाजिक विज्ञान, जनसंचार, विज्ञान)

Managing Editor
Dr. Ratnesh Kumar Jain

Editor-in-chief
Dr. Namrta Jain

Sanmati Spectrum of Knowledge & Emerging Discourse

ISSN 3108-1819 Year 1 Volume 2 Issue 2 April - June 2026

Sanmati
Spectrum of Knowledge & Emerging Discourse

(A National Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Journal)

(कला, मानविकी, सामाजिक विज्ञान, जनसंचार, विज्ञान)

Editor-in–chief
Dr. Namrta Jain
Sanmati Spectrum of Knowledge & Emerging Discourse
President
Sanmati Education & Research Foundation of India
Mob –+91 9870713912 & +91 8979782949.
sanmatijournal@gmail.com

Managing Editor
Dr. Ratnesh Kumar Jain
Sanmati Spectrum of Knowledge & Emerging Discourse
Secretary
Sanmati Education & Research Foundation of India
Mob – +91 7999525735
Jainratnesh79@gmail.com

Sanmati Spectrum of Knowledge & Emerging Discourse

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी
"समकालीन समाज में शिक्षा, ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति और मीडिया के बदलते आयाम: एक बहुविषयी दृष्टिकोण"

Editor-in–chief
Dr. Namrta Jain

Office Address-
B-002 "Sanmati", Delhi Road Moradabad (U.P)
&
200/1 "Sanmati" in front of Rajmahal Tikamgarh (M.P)
Mob- +91 9870713912 /+91 8979782949.
E-Mail- sanmatijournal@gmail.com

Publications

JTS Publications
V-508 Gali No. 17, Vijay Park, Delhi-110053
Mobile: 08527460252, 9990236819
Email: jtspublications@gmail.com

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक या जर्नल के किसी भी अंश का प्रकाशन, पुनर्प्रकाशन, फोटोकॉपी, स्कैनिंग, डिजिटलीकरण अथवा किसी भी इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में उपयोग बिना लेखक, संपादक या प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के करना पूर्णतः निषिद्ध है। इस प्रकाशन में शामिल शोध-पत्रों एवं लेखों में व्यक्त विचार, निष्कर्ष और संदर्भ संबंधित लेखकों के व्यक्तिगत मत हैं। इन विचारों के लिए संपादक, प्रकाशक या संपादकीय समिति किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं होंगे। Sanmati Spectrum of Knowledge and Emerging Discourses (A National Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Journal) की संपादकीय समिति केवल प्रकाशित सामग्री के शैक्षणिक मानकों के लिए उत्तरदायी है, लेखकों के विचारों के लिए नहीं। सभी प्रकार के विवादों का निपटारा केवल दिल्ली (भारत) के न्यायालयों के अधिकार क्षेत्र में किया जाएगा।

इस जर्नल में प्रकाशित सभी शोध-पत्र एवं लेख केवल ई-मेल के माध्यम से प्राप्त किए जाते हैं

Index

S. No.	Title of the Paper	Author	Page Nos.
1	Emerging trends in multidisciplinary education & knowledge production	Dr. Vaishali R. Vichare	1
2	Interrelationship of Education, Knowledge, and Information Technology in the Digital Age	Dr. Vandana Kumari,	13
3	Role of Herbal Extracts in Diabetes Management: A Study on Syzygium cumini (Jamun) in Experimental Mice	Renuka Kumari	23
4	Impact of Cinema on Cultural Consumption Patterns in India: A Primary Research Investigation	Dr. Sapna	38
5	Role of social media in Promoting Women Empowerment	Priyadarshani Sony	54
6	Changing Educational Culture and the Right to Education in the Digital Era	Prema Bharti Prof. Ratan Kumar Bhardwaj	64
7	Changing Dimensions of Contemporary Education Systems and the Relevance of Arham Dhyan Yog: A Multidisciplinary Perspective	Priyanshi Jain, Dr. Raka Jain,	71
8	Philosophy, Morality and Contemporary Challenges: An Analytical Study	Dr. Rishika Verma	78
9	सोशल मीडिया बनाम नैतिकता	डॉ. सुनील पाटिल	84
10	दर्शन, नैतिकता और अस्मिता का विमर्श : 'महुआचरित' उपन्यास के आलोक में समकालीन सामाजिक चुनौतियों का अध्ययन	रंजीता शर्मा,	88
11	लोक संस्कृति, लोक साहित्य और समकालीन **समाज** के अंतर्संबंधों का अध्ययन (रामदरश मिश्र और रघुवीर चौधरी के आंचलिक उपन्यासों के संदर्भ में)	विगोरा भाणजी धनजी डॉ. फिरोज़ बेग एस. मिर्ज़ा	95
12	भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा प्रणाली में अंत: क्रिया : एक व्यापक शोध प्रतिवेदन	भट्ट शितल राजेन्द्रकुमार प्रा. डॉ. गीताबहन बी. भूत.	99
13	बहुविषयी शिक्षा पध्दति और ज्ञान पंरपरा के नए आयाम	रिया प्रविन पाहुजा डॉ. आभा संजीव सिंह	107
14	वैदिक कालीन शिक्षा पद्धति की वर्तमान उपादेयता	अंशुल	115
15	इतिहास, संस्कृति और राष्ट्रीय अस्मिता के निर्माण की प्रक्रिया का ऐतिहासिक अध्ययन	डॉ सत्य प्रकाश	120
16	डिजिटल युग में शिक्षा, ज्ञान और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी में साक्षरता	कुमारी बसुन्धरा	125

17	शिक्षित महिलाओं की बदलती सामाजिक भूमिका	डॉ संगीता वेदप्रताप सिंह ठाकुर	132
18	महिला सशक्तीकरण एवं लैगिक समानता के विविध आयाम	डॉ. नरेश कुमार नेमा	141
19	समकालीन समाज में नगर निगमों की भूमिका : सामाजिक न्याय, समावेशी विकास एवं डिजीटल गवर्नेंश के बदलते आयाम	श्रीमती जया गोखले डॉ. सपना ताम्रकार डॉ. डी. डी. पृष्टि	145
20	डिजिटल और मिश्रित शिक्षा: 21वीं सदी की शैक्षिक क्रांति	डॉ. रेखा. जी	154
21	भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के बीच अंतःक्रिया	डॉ. वर्षा किरण	162
22	विज्ञान, तकनीक और मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार	अनुपमा नेमीसागर अंबुडकर	167
23	कला, साहित्य और संस्कृति के माध्यम से सामाजिक मूल्यों का पुनर्निर्माण	नीलकमल कुमार	174
24	समकालीन समाज में शिक्षा, ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति और मीडिया के बदलते आयाम: एक बहुविषयी दृष्टिकोण	डॉ. बीना	178
25	किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन दक्षता पर सोशल मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव का गुणात्मक अध्ययन	हेमलता पटेल	184
26	डिजिटल युग में शिक्षा, ज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी का अंतर्संबंध	डॉ. माधुरी सिंह	196
27	नई शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा एवं आधुनिक शिक्षा प्रणाली : समन्वय, दृष्टिकोण, सांस्कृतिक मूल्य और नवाचार का अध्ययन	श्रीमती ज्योत्स्ना झारिया	200
28	हिंदी साहित्य में समकालीन समाज में शिक्षा की स्थिति	डॉ. धर्मशिला कुमारी	210
29	सामाजिक न्याय, समानता और समावेशी विकास के समकालीन विमर्श	डॉ सरिता नेमा	220
30	भारतीय ज्ञान परंपरा में जैन साहित्य का योगदान : एक समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ. शैलेंद्र सिंह	225
31	A Study of Vocational Education in the Context of Samagra Shiksha Scheme	Pamela Ghosh Dutta Dr. Brajesh Kumar Sharma Dr. Sanjoy Bhuyan	235
32	Role And Significance of Microfinance in India	Anchal Vashistha Dr. Rajiv Kumar Agarwal	242
33	"Changing Dimensions of Media in Contemporary Society"	Dr. Sona Dhangar Dr. Ram Prakash	251
34	Rural Development, Local Economy and Concept of India Self-Reliance	Dr. Vinay Kumar Baitha	260

35	Management and Sustainable Development: A Jainism Perspective	Dr. Vipin Jain	269
36	The Changing Environment of the Bhil Tribe in the Context of Tribal Literature and Culture	Dr. Sarita Devi	289
37	डिजिटल युग में हिन्दी भाषा-साहित्य का रूपांतरण : एक अध्ययन	मनोज कुमार पटेल	295
38	"डिजिटल युग में शिक्षक की भूमिका : Educational Technology के संदर्भ में एक अध्ययन"	डॉ. समीना कुरैशी	303
39	जैनेंद्र की कहानियों में अभिव्यंजित आस्तिकता : समकालीन सामाजिक एवं दार्शनिक परिप्रेक्ष्य	मुक्ति प्रभात जैन	308
40	लैंगिक समानता, महिला सशक्तिकरण एवं सामाजिक विकास में महिलाओं की भूमिका: चुनौतियाँ, अवसर और समाधान	अनुराधा	314
41	समकालीन समाज में शिक्षा, ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति और मीडिया के बदलते आयामः एक बहुविषयी दृष्टिकोण	डॉ. सागर देसले	322
42	समकालीन समाज में मीडिया की प्रमुख समस्याएँ और उनके सम्भावित समाधान- जैन दर्शन के सम्बन्ध-सिद्धान्तों के आलोक में	ऋतु जैन एमेरिटस प्रो. राका जैन	327
43	भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा पद्धति के बीच अंतर्संबंध	डॉ. अशोक कुमार	335
44	भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के बीच अंतः क्रिया	डॉ मनोरमा जैन	343
45	गंगा को अविरल एवं निर्मल बनाने में युवाओं की भूमिका : चुनौतियाँ, संभावनाएँ एवं समाधान — एक समीक्षात्मक अध्ययन"	डॉ मोहित कुमार डॉ० विजय शर्मा डॉ सुशील भदूला	351
46	डिजिटल मीडिया और वेब सीरीज़ में भाषा, लोक संस्कृति एवं सामाजिक पहचान का अंतरसंबंध	सचिन कुमार डॉ. एस. पद्मप्रिया	358
47	समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा प्रणाली के बदलते आयाम और चुनौतियाँ	डॉ. जी. उमानरसिम्हा मूर्ति	364
48	भारतीय लोकगीत: सस्कृति, समाज, नारी चेतना एवं लोकजीवन का समग्र अध्ययन	श्रीमती कुसुम प्रजापति प्रो. अरुण शुक्ला	368
49	समकालीन समाज में शिक्षा का महत्त्व	डॉ. निवेदिता कुमारी	378
50	लोक साहित्य में उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति	डॉ. दीपिका आत्रेय	381
51	समकालिन हिंदी एवं मराठी उपन्यासो में साम्प्रदायिकता	नदाफ अजरुद्दीन सलिम प्रो. हाशमबेग मिर्झा	384

52	समकालीन समाज में मीडिया का संस्कृति, जीवनशैली, सामाजिक मूल्यों एवं युवा चेतना पर प्रभाव : एक समग्र अध्ययन	डॉ अल्पना शर्मा	391
53	भारतीय ज्ञान परंपरा का गिजुभाई बधेका के शैक्षिक विचारों पर प्रभाव	विजय सिंह माली	398
54	उच्च शिक्षा के विकास में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. गोरधन जाटव	402
55	महात्मा गांधी एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक न्याय और समावेशी विकास संबंधी विचारों का तुलनात्मक विश्लेषण	डॉ सोनी कुमारी	409
56	डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया और जनमत निर्माण की प्रक्रिया	श्रीमति रश्मि अनिल जैन	417
57	मानव जीवन पर प्रौद्योगिकी का प्रभाव	डॉ. संगीता कुम्भारें	422
58	कल्याणकारी राज्य की स्थापना में जैन साहित्य का योगदान : एक अध्ययन	डॉ. ज्योति गौतम	429
59	दर्शन नैतिकता और समकालीन सामाजिक चुनौतियाँ : भारतीय संदर्भ में	डॉ. प्रीति प्रज्ञा	436
60	वैज्ञानिक तकनीकों से मानव विकास में योगदान एवं भविष्य आधारित दृष्टिकोण	महेन्द्र सिंह राणा	441
61	A Study of Cognitive Styles Among Secondary School Students and Their Stress Management	Dr. Riyanka Singh Sandhya Yadav	447
62	Reconstruction of Social Values through Art, Literature and Cultural discourses	Sajal Jharia Prof. (Dr.) Vineeta K. Saluja	453

56

डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया और जनमत निर्माण की प्रक्रिया

श्रीमति रश्मि अनिल जैन
(M. A . in Jain and Prakrit)

प्रस्तावना - डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया और जनमत निर्माण प्रक्रिया चर्चा के माध्यम, सूचनाओं के प्रसार और चर्चा के माध्यम से लोगों के विचारों को आकार देती है जिससे सामाजिक और राजनैतिक बदलाव आते हैं । इस प्रक्रिया को तेज और विकेन्द्रिकृत कर दिया है ।

डिजिटल और सोशल मीडिया ने जैसे यू ट्यूब, ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम ने जनमत को तीव्र गति और संवादात्मकता के साथ बदलकर लोकतांत्रिक प्रकिया में क्रांति ला दी है।

डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया प्लेटकार्म अपने प्राथमिक सामाजिक कार्य से आगे बढकर सार्वजनिक चर्चाओं के प्रभावशाली मंच बन गए हैं । मेरा यह लेख वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए सोशल मीडिया की लाभकारी और हानिकारक दोनों भूमिकाओं का विश्लेषण करता है । साथ ही इतिहास के कुछ एतिहासिक तथ्यों पर भी संक्षेप में बताता है जहाँ नेटवर्क का उपयोग महत्वपूर्ण है ।

जनमत निर्माण की प्रक्रिया में डिजिटल मीडिया / सोशल मीडिया की भूमिका

❀ तेजी से प्रसार - डिजिटल मीडिया के माध्यम से समाचार और सूचनाएँ बहुत तेजी से फैलती हैं । जिससे जनमत का निर्माण जल्दी होता है । जनता अपनी प्रतिक्रिया तुरंत देती है ।

❀ एजेन्डा सेटिंग - सोशल मीडिया यह तय करता है कि जनता किन मुद्दों पर / विषयों पर बात करेगी जो जनमत का मुख्य कारक है । तेजी से वायरल होने वाले हैशटैग किसी भी मुद्दे को राष्ट्रीय विमर्श का हिस्सा बना सकते है।

❀ फ्रेमिंग - किसी भी मुद्दे को किस दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया जा रहा है (सकारात्मक या नकारात्मक) यह सोशल मीडिया पर कीवर्ड्स और ट्रेंडस के जरिए तय होता है।

❀ एल्गोरिदम की भूमिका - प्लेटफार्म के एलगोरिदम उपयोगकर्ता की रुचि के अनुसार सामग्री देखते हैं जिससे एक 'इको ' चेम्बर बनता है - उपयोगकर्ता अपनी पसंद के विचार बार बार देखते हैं जो उनके मत को मजबूत करता है।

❀ इन्फ्लुएंसर और ओपिनियन लीडर्स और नेटवर्क प्रभाव - सोशल मीडिया पर इन्फ्लुएंसर, जिन्हें लोग पारंपरिक मीडिया से अधिक भरोसेमंद मानते हैं । जनमत के आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । इन्फ्लुएंसर या

प्रभावशाली उपयोगकर्ता अपनी राय को तेजी से आकार देते हैं और यूट्यूब आदि के माध्यम से बडे जनसमूह को प्रभावित करते हैं ।

🌸 डिजिटल साक्षरता की आवश्यकता - गलत सूचनाओं को रोकने के लिए डिजिटल साक्षरता और सोशल मीडिया प्लेटफार्म द्वारा सामग्री को मार्क करना जनमत को स्वस्थ रखने के लिए अनिवार्य है ।

🌸 भागीदारी और संवाद - आम आदमी अब केवल सूचना का उपभोक्ता ही नहीं है बल्कि निर्माता भी है जो कमेन्ट्स, शेयर और लाइव के जरिए सक्रिय रुप से जनमत का हिस्सा बनते हैं ।

⭐ जनमत को आकार देने में सोशल मीडिया की भूमिका -

🌸 जनमत का लोकतंत्रिकरण- सोशल मीडिया ने शोषित और हाशिए पर पड़े लोगों को आवाज देकर और उनके दृष्टिकोण को व्यापक दर्शकों के साथ साझा करके सार्वजनिक मंत्र का लोकतंत्रिकरण किया है ।

🌸 नई सूचनाओं का प्रसार - २ सोशल मीडिया ने पर्यावरण प्रेस की स्वतंत्रता, नागरिक केंद्रित पत्रकारिता जैसे नए क्षेत्रों में सूचनाओं के तीव्र प्रसार को संभव बनाया ।

🌸 सार्वजनिक नीति पर प्रभाव - राजनेताओं और सरकारों द्वारा सोशल डिजिटल मीडिया का उपयोग अपनी पहलों के लिए, समर्थन जुटाने, प्रचार करने और बहसों विज्ञापनो और सामाजिक अभियानों के उपयोग के माध्यम से अपने समर्थन को व्यापक बनाने के लिए किया गया है ।

🌸 जनमत का ध्रुवीकरण - सोशल मीडिया एल्गोरिदम उपयोगकर्ता की प्राथमिकतायों को एकत्र करते हैं और उनका उपयोग सामग्री को वैयक्तिकृत करने के लिए करते हैं । जहां व्यक्तियों को एक ही प्रकार की सामग्री के संपर्क में लाया जाता है जिससे मौजूदा विश्वासो को मजबूती मिलती है और जनमत के ध्रुवीकरण में योगदान होता है ।

⭐ भारत में सोशल मीडिया का राजनीतिक उपयोग - भारत में राजनीतिक दल और उनके नेता सोशल मीडिया को जनमत निर्माण के लिए बड़े पैमाने पर उपयोग कर रहे हैं । भारतीय जनता पार्टियाँ, कांग्रेस, आम आदमी पार्टियां और अन्य क्षेत्रिय दल अपने अभियानों को बढ़ावा देने के लिए फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम का व्यापक उपयोग करते हैं । प्रधानमंत्रि श्री नरेन्द्र मोदी का सोशल मीडिया पर दुनियां के सबसे ज्यादा फॉलो किए जाने वाले नेताओं में शामिल हैं । उनके ट्विटर हैंडल और फेसबुक पेज पर बड़ी संख्या में फॉलोअर्स हैं जो उनके राजनीतिक एजेंडा को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाने में सहायक है ।

⭐ सामाजिक भलाई के लि सोशल मीडिया

AIU व्यक्तिगत विकास और सामाजिक कल्याण में योगदान के लिए सोशल मीडिया की भूमिका पर जोर देता है । सहयोगी परियोजनाओं और सामुदायिक पहलुओं के माध्यम से छात्रो को सकारात्मक बदलाव को बढ़ावा देने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है । उदाहरण के लिए - मानसिक स्वास्थ्य, पर्यावरण स्थिरता और सामाजिक न्याय के बारे में जागरूकता बढाने वाले अभियान सुनियोजित सोशल मीडिया रणनीतियों से

काफी लाभान्वित हो सकते हैं । इसके अलावा एआई यू के छात्र पेशेवर नेटवर्क बनाने और शैक्षणिक लब्धियों और अनुसंधान पहलुओं को साझा करने के लिए इन प्लेटफार्मों का उपयोग करना सीखते हैं। इससे न केवल उनकी व्यक्तिगत छवि बेहतर होती है बल्कि यह विश्वविद्यालय की उस विरासत में भी योगदान देता है जिसके तहत जटिल वैश्विक चुनौतियों का सामना करने में सक्षम नेताओं को तैयार किया जाता है।

⭐ सोशल मीडिया और जनमत का भविष्य -

भविष्य में जनमत निर्माण में सोशल मीडिया की भूमिका और भी महत्वपूर्ण होने वाली है । ए आई यू छात्रों को इस परिदृश्य में प्रभावी ढंग से आगे बढ़ने के लिए तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध है जिसमें प्रौद्योगिकी के नैतिक उपयोग और आलोचनात्मक सोल कौशल के महत्व पर जोर दिया गया है।

⭐ नैतिक विचार और गलत सूचना -

आज के डिजिटल युग में सबसे बडी चुनौतियों में से एक गलत सूचनाओं का प्रसार है । ए आई यू सामग्री के उपयोग के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण का समर्थन करता है । छात्रों को स्रोतो पर सवाल उठाने, तथ्यों की पुष्टि करने और ऐसे विचार विमर्श में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो संबंधित मुद्दों की बेहतर समझ विकसित करने में सहायक हो । प्रत्येक छात्र के अनुरूप पाठ्यक्रम विकसित करते हुए ए आई यू व्यक्तिगत और व्यवसायिक विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के तहत डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देता है।

गलत सूचनाओं को लेकर बढ़ती चिंताओं के जबाब में ट्विटर और फेसबुक जैसे प्लेटफार्मों ने गलत सूचनाओं को चिन्हित करने और हटाने के उपाय शुरु किए हैं ।

⭐ सोशल मीडिया का प्रभाव

🌸 सक्रिय भागीदारी - उपभोगकर्ता अब निष्क्रिय दर्शक नहीं बल्कि सक्रिय चर्चाकार है । सोशल मीडिया ने आम जनता को सिर्फ उपभोक्ता से निर्माता बना दिया है । जहाँ नागरिक राजनीतिक संवाद, आंदोलन और मतदान व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

🌸 लोकतांत्रिकरण- आम आदमी को अपनी बात रखने का मंत्र मिलता है । सोशल मीडिया ने सूचना के प्रवाह को अबाधित कर दिया है । अब आम नागरिक कार्यकर्ता और आम जनता भी अपनी राय, मुद्दे और शिकायतें बिना किसी रुकावट के सीधे दुनियां तक पहुंचा सकते हैं । यह voice to voice संवाद को संभव बनाता है ।

🌸 ध्रुवीकरण और चुनौतियां - फेक न्यूज और नफरत भरे भाषण से जनमत को गलत दिशा में मोड़ा जा सकता है जिससे डेटा संरक्षण कानूनों की आवश्यकता बढ़ती है। यह एल्गोरिदम के माध्यम से ईको चैंबर बनाकर उपयोगकर्ता को केवल उनके विचारों के अनुरूप सामग्री दिखाता है जिससे मतभेद बढ़ते हैं और समाज में राजनीतिक और सामाजिक श् ध्रुवीकरण होता है । यह तंत्र चरम पंथी विचारों को बढ़ावा देता है और नरमपंथ को कम करता है जिससे राजनीतिक मतभेद गहरे होते हैं।

❀ फेक न्यूज और गलत सूचनाएँ - सोशल मीडिया पर गलत सूचना का तेजी से प्रसार जनमत को गुमराह कर सकता है । जिससे झूठी धारणाएँ, ध्रुविकरण और भ्रम पैदा होता है । यह त्वरित प्रसार चुनाती नतीजों में हेरफेर करने, सामाजिक अस्थिरता बढाने और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को कमजोर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि भावनात्मक रूप से आवेशित सामग्री आसानी से वायरल हो जाती है।

❀ राजनीतिक प्रभाव - चुनाव और नीति निर्धारण में सोशल मीडिया का उपयोग बढ़ा है जहाँ सोशल मीडिया पर धारणा का सीधा असर वोटिंग पैटर्न पर पड़ता है । सोशल मीडिया का उपयोग मतदाताओं को लामबंद करने, भरती करने और चुनावी रणनीतियां बनाने के लिए किया जाता है ।

★ नफरत और गलत सूचनाओं को रोकने के लिए सोशल मीडिया का किस प्रकार विनियमित किया जा सकता है ।

❀ घृणास्पद भाषण और हिंसा को नियंत्रित करना -

" घृणास्पद भाषण" की परिभाषा को स्पष्टरूप से परिभाषित करने प्रभावी प्रवर्तन तंत्र विकसित करने और सरकार, नागरिक, समाज और सोशल मीडिया कंपनियों के बीच सक्रिय सहयोग की तत्काल आवश्यकता है ।

❀ डेटा संरक्षण - चूंकि सोशल मीडिया बडी मात्रा में व्यक्तिगत डेटा एकत्रित करता है इसलिए एक मजबूत डेटा संरक्षण कानून की आवश्यकता है जो सूचित सहमति उपयोग में पारदर्शिता और गोपनीयता के अधिकार को सुनिश्चित करे ।

❀ गलत सूचना और भ्रामक जानकारी का प्रसार - गलत सूचना और भ्रामक जानकारी निर्णय लेने की प्रक्रिया को बाधित करती है और पुष्टि पूर्वाग्रह को जन्म देती है । मीडिया साक्षरता को बढ़ावा देने, आल्ट न्यूज जैसे तथ्य जांच प्लेटफार्मो को स्थापित करने और प्लेटफार्म प्रदाताओं की जबाबदेही सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।

❀ कठोर कानूनी तंत्र - सरकार द्वारा निर्धारित नए आई टी नियमों में कंपनियों पर उनके प्लेटफार्मों पर पोस्ट की जाने वाली घृणास्पद बातों और गलत सूचनाओं के संबंध में अधिक दायित्व डाल दिया है।

❀ अंतर्राष्ट्रीय सहयोग - चूंकि इनमें से अधिकांश सोशल मीडिया प्लेटफार्म विदेशी हैं और उनके डाटा नियंत्रण केन्द्र भारत के बाहर स्थित है इसलिए फर्जी खबरों, नफरत फैलाने वाले भाषणों और गलत सूचनाओं से लड़ने के लिए विदेशी सरकारों और बड़ी तकनीकी कंपनियों के साध सहयोग की आवश्यकता है।

❀ शिकायत निवारण - अदालतों को घृणास्पद भाषण, फर्जी खबरों और हिंसा के बढ़ते मामलों का बहुत सख्ती से संज्ञान लेना चाहिए । इस समस्या के समाधान के लिए त्वरित निपटान हेतु त्वरित अदालतों की स्थापना की आवश्यकता है ।

निष्कर्ष - डिजिटल युग में जनमत का निर्माण एक जटिल गतिशील और कभी कभी विभाजित घटना है। सोशल मीडिया में जनमत को सकारात्मक या नकारात्मक रूप से प्रभावित करने की अपार क्षमता है । डिजिटल और सोशल मीडिया में जनमत को लोकतांत्रिकता प्रदान की है । लेकिन साथ ही सूचना की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिन्ह भी खड़ा

किया है । इसमें सकारात्मक उपयोग के लिए डिजिटल साक्षरता और संतुलित संवाद अत्यंत आवश्यक हैं । सोशल मीडिया के उपयोग में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और जनहित के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है । हमारे समाज के सामाजिक ताने - बाने को पुनर्जीवित करने के लिए समुदायों और व्यक्तियों के बीच सामाजिक मेलजोल को पुनर्जीवित करना अत्यन्त आवश्यक है ।

संदर्भ सूचि

1. मीडिया लेखन चंद्र प्रकाश मिश्र(सिद्धांत और व्यवहार)

2.मीडिया और लोकतंत्र - विनीत कुमार

3. मीडिया और संचार - अमोल महाजन

4. डिजिटल मीडिया - शैलेन्द्र तिवारी5. इग्नू के नोट्स